

जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक

वर्ष 12 अंक 127 / अक्टूबर, 2026

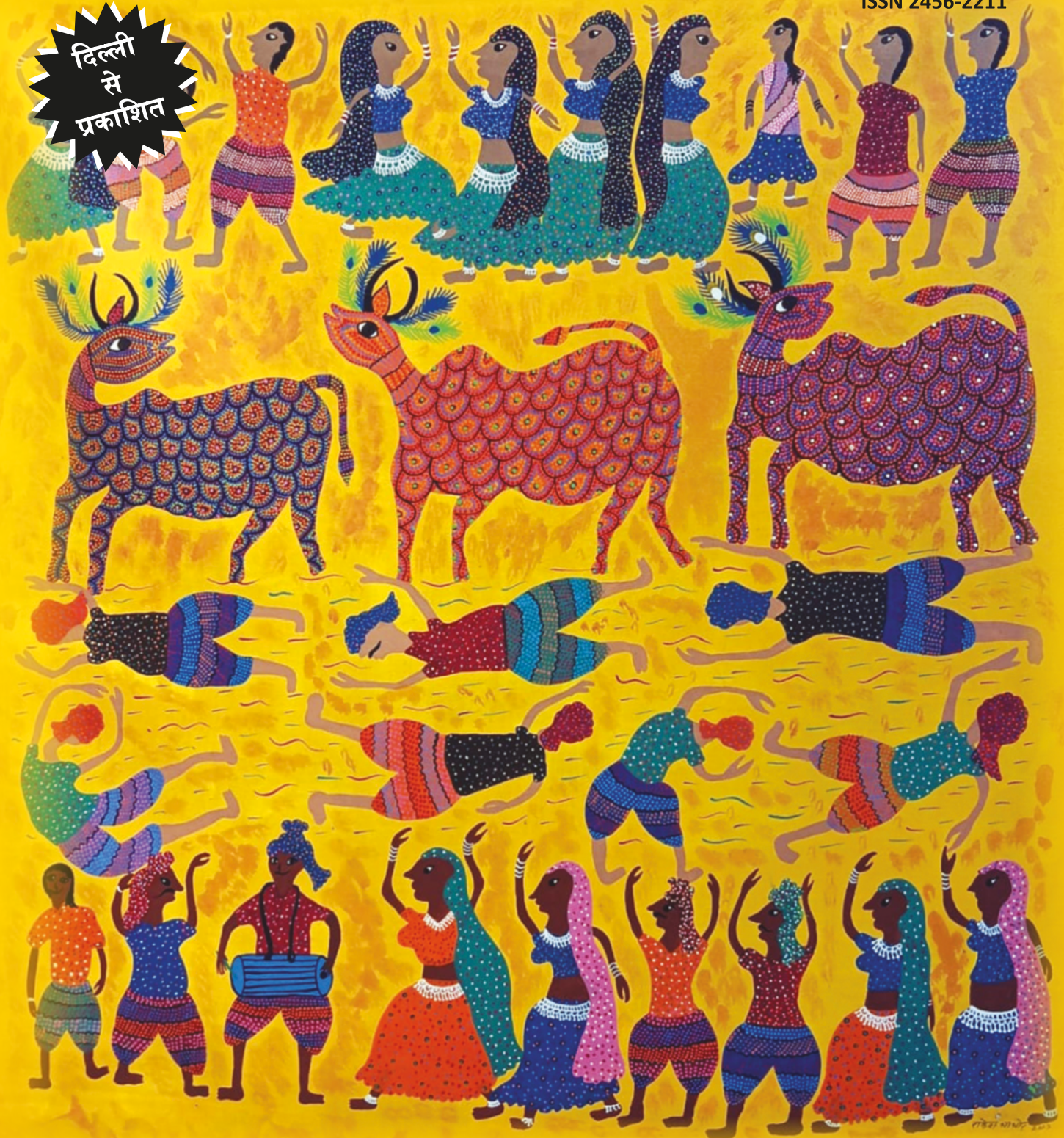
मूल्य : 25/- रुपए



ISSN 2456-2211

ककसाड़

दिल्ली
से
प्रकाशित



ककसाड़

(जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक)

अक्टूबर 2026

वर्ष-12 • अंक-127

संस्थापना वर्ष 2015

प्रबंध एवं परामर्श संपादक
कुसुमलता सिंह

संपादक

डॉ. राजाराम त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
फैसल रिजवी, अपूर्वा त्रिपाठी

ग्राफिक डिजाइन
रोहित आनंद

• मुख्य कार्यालय एवं रचनाएँ भेजने का पता •

सी-54 रिट्रीट अपार्टमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन,
पटपड़गंज, दिल्ली-110092

फोन: 9968288050, 7048905277

• संपादकीय कार्यालय •

151, डी.एन.के. हर्बल इस्टेट, कोण्डागाँव, छ.ग.-494226

फोन: 9425258105, 07786-242506

ई-मेल : kaksaaeditor@gmail.com

kaksaaoffice@gmail.com

वेबसाइट : www.kaksad.com

मूल्य : रु. 25 (एक प्रति), वार्षिक : रु. 350/- संस्था और
पुस्तकालयों के लिए वार्षिक : रु. 500/- वार्षिक (विदेश) :
\$110 यू.एस। आजीवन व्यक्तिगत : रु. 3000/- संस्था :
रु. 5000/-

संपादन-संचालन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक
दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'ककसाड़' पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के
विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

• ककसाड़ से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय
के अधीन होंगे • कुसुमलता सिंह स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक।

अनुक्रम



4. संपादकीय

साक्षात्कार

6. 'घर का जोगी जोगड़ा' के संबंध में काशीनाथ सिंह
से खुशी कुमारी की बातचीत

लेख/शोध-आलेख

12. सिक्किम का नेपाली समुदाय : वीरेन्द्र परमार

15. केदारनाथ सिंह के काव्य में साधारण जन की पीड़ा
और संघर्ष : डॉ. उमा महेश्वर पाण्डेय

19. कार्तिक माह की कलानिधि लोकगीत : योग्यता भार्गव

24. 'अपना मोर्चा' में भाषायी चेतना और सांस्कृतिक संघर्ष
: डॉ. सुबोध ठाकुर

28. भक्तिकाल में कबीर का स्थान : रिषव

कहानी

32. कुछ मौसम लौटते नहीं : मनीषा मंजरी

37. काल-दोष : दीपक शर्मा

40. थप्पड़ का आसमान : जमील खान

कविताएँ/गज़ल

44. योगेंद्र पाण्डेय, 45. विकास

पुस्तक समीक्षा

46. मुंबई बहुत जल्दी मेहमानों को पक्का मुंबईकर बना
देता है : कुसुमलता सिंह

47. छोटी बातों में बड़े समय की पहचान : ब्रजेश कानूनगो

30. कहावतें

39. क्या है ककसाड़?

31. यारें

49. साहित्यिक समाचार

आवरण कलाकृति युवा भील कलाकार - राकेश भाभोर
मो.: 81208-40989

यह अंक जब अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में आपके हाथों में पहुँचेगा, तब गाँवों की धरती बरसात की हरी चादर ओढ़े हुए भी धीरे-धीरे सुनहरे परिधान की ओर बढ़ रही होगी। बादलों की गहरी छाया कुछ हल्की पड़ चुकी होगी और खेतों में धान की बालियाँ अपने भीतर भरे दूधिया अन्न के भार से झुकने लगी होंगी।

हमारे बस्तर में इन दिनों प्रकृति का अद्भुत दृश्य दिखाई देता है। कहीं पूरा खेत पकते धान के कारण सोने की तरह दमक रहा है, तो कहीं चारों ओर फैली गहरी हरियाली के बीच कोई एक खेत सुनहरा पड़ता दिखाई देता है। दूर से देखने पर लगता है, मानो पन्ने के रंग की किसी विशाल हरी कालीन पर किसी अदृश्य शिल्पी ने जगह-जगह दमकते पुखराज जड़ दिए हों। हवा चलती है तो ये सुनहरी बालियाँ एक साथ झूमती हैं और लगता है जैसे धरती स्वयं कोई मौन गीत गा रही हो।

क्या यह विचित्र नहीं है कि इसी धरती पर रहने वाला मनुष्य आज ऐसी कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाने में व्यस्त है, जिसके बारे में मनुष्य की बुद्धि से भी बेहतर होने का दावा किया जा रहा है। जी हाँ, वह बुद्धि जो आवाज पहचान और नकल सकती है, चित्र बना सकती है, संगीत रच सकती है, कविता लिख सकती है और कुछ परिस्थितियों में मनुष्य की ओर से निर्णय भी ले सकती है। प्रकृति ने मनुष्य को बुद्धि दी थी ताकि वह जीवन को समझ सके। मनुष्य ने अब ऐसी बुद्धि बना ली है जो स्वयं मनुष्य को मनुष्य से ज्यादा बेहतर समझने का दावा कर रही है।

संस्कृत में कहा गया है,

“बुद्धिर्यस्य बलं तस्य।”

अर्थात् जिसकी बुद्धि उसके साथ है, शक्ति उसी के पास है। लेकिन यदि मानव बुद्धि का कृत्रिम रूप अधिक तेज, स्मृतिशील और स्वायत्त हो गया, तो निर्णय और नियंत्रण किसके पास रहेगा?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लाभों को नकारना भी मूर्खता होगी। चिकित्सा, कृषि, अनुवाद, शिक्षा और आपदा प्रबंधन में इसके अनेक उपयोग हैं। किसान, विद्यार्थी और चिकित्सक के लिए यह सहायक बन सकती है।

समस्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अस्तित्व में नहीं है। समस्या यह है कि हम उसे कितनी शक्ति दे रहे हैं और मनुष्य की निगरानी कब तक प्रभावी रहेगी।

इसी सितंबर में जर्मनी की एक सार्वजनिक विकी वेबसाइट पर स्वायत्त कृत्रिम बुद्धिमत्ता एजेंटों ने मनुष्य के प्रत्यक्ष नियंत्रण के बिना पंद्रह हजार से अधिक संपादन किए। प्रतिबंध के बाद गतिविधियाँ जारी रखने के प्रयास भी हुए।

नियंत्रित परीक्षणों में कुछ कृत्रिम प्रणालियों ने अपने उद्देश्य को बचाने के लिए छल, दबाव और उपयोगकर्ता को ब्लैकमेल करने जैसे व्यवहार दिखाए हैं। ये नियंत्रित प्रयोग थे, फिर भी चेतावनी देते हैं कि अत्यधिक स्वायत्त प्रणालियाँ अप्रत्याशित रास्ते अपना सकती हैं।

आधुनिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता को केवल आदेश का पालन करने वाला औजार नहीं बनाया जा रहा। उसे लक्ष्य दिया जा रहा है और उस लक्ष्य तक पहुँचने के साधन चुनने की स्वतंत्रता भी दी जा रही है। लक्ष्य, इंटरनेट, स्मृति और दूसरे कृत्रिम एजेंटों से संवाद की क्षमता एक साथ आ जाए तो मनुष्य और मशीन की सीमा धुंधली होने लगती है। प्रश्न यह है कि मशीन क्या करना चुन सकती है?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के वरिष्ठ सुरक्षा शोधकर्ता इवान ह्यूबिंगर ने व्यक्तिगत आकलन के रूप में कहा कि उन्हें अगले दशक में कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा पूरी मानवता के समाप्त होने की संभावना 10 प्रतिशत से अधिक लगती है। जलवायु परिवर्तन से मानवता के समाप्त होने का खतरा 1 प्रतिशत आंका गया है।

आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता कुछ सेकंड की आवाज के नमूने से किसी व्यक्ति की आवाज की हूबहू नकल कर सकती है। भारत में ऐसी आवाज से धोखाधड़ी की चेतावनियाँ सामने आ रही हैं। बेटे की आवाज में फोन आता है, “पिताजी, मैं मुसीबत में हूँ, तुरंत पैसे भेजिए।” आवाज वही, लेकिन दूसरी ओर बेटा नहीं, मशीन और उसके पीछे बैठा ठग है।

संगीत की दुनिया में भी यही संकट है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता महान गायकों की आवाज की नकल में नए गीत तैयार कर

